नवरात्रि पूजन के लिए पूजा-वेदी और अर्पण-सामग्री

नवरात्रि पर्व के दौरान, पूजन के माध्यम से महादेवी कुण्डलिनी शक्ति का सम्मान किया जाता है। इस वर्ष श्री मुक्तानन्द आश्रम में, देवी के तीन प्रमुख स्वरूपों — महादुर्गा, महालक्ष्मी और महासरस्वती का पूजन एक यजमान दम्पत्ति के साथ एक ब्राह्मण पुजारी द्वारा किया जाएगा। पूजन की विधि में उपयोग आने वाली प्रत्येक सामग्री व तत्त्वों का एक विशिष्ट प्रतीकात्मक महत्त्व है।

प्रमुख मूर्तियाँ

प्रज्ञान व बुद्धि के देवता, मंगलमय आरम्भ के देवता एवं विघ्नहर्ता भगवान श्रीगणेश की मूर्ति का, किसी भी मांगलिक कार्य में उनके आशीर्वादों को सुनिश्चित करने के लिए, पारम्परिक रूप से सर्वप्रथम पूजन किया जाता है।
ब्राह्मण पुजारी व यजमान दम्पत्ति, माँ अन्नपूर्णा की मूर्ति की पूजा करते हैं, जो आहार व पोषण की देवी हैं और इस प्रकार वे समस्त सृष्टि की पालनहार हैं। देवी का यह रूप, पूजन के दौरान उनके तीनों मुख्य स्वरूपों को दर्शाता है। प्रारम्भिक पूजा से पहले ब्राह्मण पुजारी, प्राण-प्रतिष्ठा करते हैं, इस विधि में मूर्ति में प्राण-शक्ति को स्थापित किया जाता है। ऐसा करने पर, मूर्ति को देवी की शक्ति का चैतन्य स्वरूप माना जाता है।

यजमान दम्पत्ति

पारम्परिक पूजन के अनुसार, यजमान दम्पत्ति, सम्पूर्ण पूजा के दौरान ब्राह्मण पुजारी की धार्मिक अनुष्ठान में सहायता करते हैं। दम्पत्ति, परमात्मा व उनकी शक्ति के एकत्त्व के प्रतीक हैं।

पूजा की वेदी

पूजन-विधि में जल से भरे पीतल, मिट्टी या ताम्बे के कई कलशों का उपयोग किया जाता है। इनमें से सबसे बड़े कलश को देवी की मूर्ति के ठीक नीचे रखी थाली में उनके सिंहासन के रूप में रखा जाता है। छोटे कलशों को ब्राह्मण पुजारी व यजमान दम्पत्ति के पास रखा जाता है। इन्हें जल से भर कर रखते हैं और इसका उपयोग पूजा के दौरान किया जाता है। कलश, देवी के प्रचुरता व मंगलमय

रूप को दर्शाते हैं और समस्त सृष्टि के मूल स्रोत, बीजभूत गर्भ के प्रतीक है। कलश में रखा जल, भारत की तीन पवित्र नदियों-गङ्गा, यमुना व सरस्वती के शुद्धिकारक सद्‌गुणों को दर्शाता है।

देवी माँ एक राजसी छत्र के नीचे विराजमान होती हैं जिसे आम के पत्तों से सजाया जाता है। आम के पत्ते प्रेम के देवता कामदेव के सहयोगी हैं तथा वे देवी की अपनी स्वयं की सृष्टि व उनकी सृजनकारी शक्तियों के आनन्द को दर्शाते हैं। आमों की मधुरता हमें देवी के आनन्द का स्मरण कराते हैं।

कलश के नीचे की थाली में मिट्टी भरी जाती है और उसमें सात तरह के अनाज डाले जाते हैं, जो नवरात्रि के नौ दिनों में अंकुरित होकर विकसित हो जाते हैं। यह थाली देवी के पोषण देनेवाले सद्‌गुणों का सम्मान करती है व फसल को दर्शाती है।

एक स्प्ताह लैम्प की दीप-ज्योत, देवी की उस शक्ति का प्रतीक है जो अपने दिव्य ज्ञान के प्रकाश से अज्ञान रूपी अन्धकार को दूर कर देती है। दीपक की ज्योत हृदय के प्रकाश को दर्शाती है और पूजा की साक्षी बनती है।

अर्पण-भेंट

देवी माँ को अर्पित की जाने वाली भेंट उनकी श्रेष्ठता के अनुकूल होती हैं और, चूँकि देवी माँ की मूर्ति को अब चैतन्य माना जाता है, अतः ये भेंट देवी माँ की पाँच इन्द्रियों को निवेदित की जाती हैं।

इनमें से कुछ वस्तुएँ खाद्यान्न के रूप में होती है जैसे अक्षत, सुपारी, पीली सरसों, फल, हल्दी, मिठाइयाँ और नारियल। अर्पित किए गए ये खाद्यान्न धरती की उदारता के प्रतीक हैं जो इस सृष्टि का पालन-पोषण करते हैं तथा रसास्वादन का आनन्द प्रदान करते हैं।

अर्पण किया जाने वाला एक और पौष्टिक अर्पण है पञ्चामृत, जिसे भगवान का अमृत माना जाता है — पञ्च का अर्थ है "पाँच" और अमृत का अर्थ है "अमरता प्रदान करने वाला रस।" यह पाँच मनभावन तथा स्वादिष्ट अवयवों का एक मिश्रण होता है, जिनमें से हर एक का प्रतीकात्मक महत्त्व है। दूध, शुद्धता का; दही, प्रचुरता का; शहद, एकत्त्व तथा मधुर वाणी का; शर्करा, आत्मानन्द का; और घी, विजय व ज्ञान को दर्शाता है।

अन्य अर्पण की जाने वाली सामग्री हैं, सुगन्धित फूल — विशेषरूप से गुलाब, गुलाब की पंखुड़ियाँ व मालाएँ — तथा, साथ ही सुगन्धित तेल या इत्र, चन्दन चूरा और अगरबत्तियाँ। कहा जाता है कि

देवी माँ में सुगन्ध का गहन बोध है और वे मधुर सुगन्ध की ओर सहज ही आकर्षित होती हैं। हमारी यह परम्परा है कि व्यक्ति अन्तर में विकसित उत्तम सद्गुणों को अर्पित करे और पुष्प हमारी इसी नैसर्गिक अच्छाई का प्रतिनिधित्व करते हैं।

देवी माँ को आभूषण, श्रृंगार प्रसाधन, साड़ी व सिक्कों के अर्पण द्वारा दृष्टिबोध व स्पर्शानुभूति का आह्वान किया जाता है। एक और पारम्परिक अर्पण है, लाल रंग का कुमकुम, जो शक्ति व मांगल्य का प्रतीक है। अकसर कुमकुम को प्रतिभागियों के मस्तक पर दोनों भौंहों के मध्य, आज्ञा-चक्र के स्थान पर बिन्दी के रूप में लगाया जाता है जो अन्तर में श्रीगुरु का स्थान और दिव्य प्रज्ञान का केन्द्र है। इन राजसी उपहारों से सौन्दर्य व प्रचुरता के रूप में देवी का वन्दन-पूजन किया जाता है।

पूजन के दौरान घण्टी बजाने से श्रवणेन्द्रिय उद्दीप्त होती है और इसके द्वारा देवी माँ की उपस्थिति का आह्वान किया जाता है। यह घण्टी देवी माँ को उनकी पूजा के हमारे संकल्प से अवगत कराती है। घण्टी की ध्वनि, आदि नाद 'ॐ' को दर्शाती है और पूजा स्थल को पवित्र बनाती है। यजमान दम्पत्ति घण्टी बजाकर पूजा से पहले, मूर्ति को स्नान कराते समय, आरती करते समय, और पवित्र उपहार अर्पित करते समय पूजा के महत्त्वपूर्ण क्षणों का परिचय देते हैं। घण्टी का आकार अनन्तता का, उसकी लटकन, महासरस्वती का, उसका हैंडल प्राण-शक्ति का प्रतीक है।

पूजन में अर्पित की जानेवाली सभी भेंटों में सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण हैं, मन्त्र और प्रार्थनाएँ, जो देवी की आराधना व स्तुति में की जाती है। शैव-दर्शन के ग्रन्थ सिखाते हैं कि मन्त्र के स्पन्दन देवी माँ और सभी देवताओं की मूल प्रकृति है। मन्त्रों के पठन द्वारा हम सभी मन्त्रों के स्पन्दनशील हृदय को जाग्रत करते हैं — स्पन्द, वह आदि स्पन्दन है जो समस्त सृष्टि की रचना, पालन व संहार करता है और हम मन्त्र और प्रार्थनाएँ गाकर सभी के हृदय में निवास करने वाली देवी माँ को प्रसन्न करते हैं।

© २०१९ एस.वाय.डी.ए. फ़ाउन्डेशन® । सर्वाधिकार सुरक्षित।